जाहि पास जात सो तौ राखि न सकत याते,
तेरे पास अचल सुप्रीति नाधियतु हैं।
भूषन भनत सिवराज तव कित्ति सम,
और की न कित्ति कहिबे को काँधियतु है॥
इन्द्र कौ अनुज तैं उपेन्द्र अवतार यातें
तेरो बाहुबल लै सलाह साधियतु है।
पायतर आय नित निडर बसायबे को
कोट बाँधियतु मानो पाग बाँधियतु है॥१०३॥

शब्दार्थ—नाधियतु=जोड़ते हैं। काँधियतु=ठानते हैं,

स्वीकार करते हैं। उपेन्द्र = विष्णु। पायतर = पैरों के तले, चरणाश्रय में। पाग = पगड़ी। कोट = किला।

अर्थ—मुसलमानों के अत्याचारों से पीड़ित राजा लोग जिसके पास शरणार्थ जाते हैं वे तो उन्हें अपनी शरण में रख नहीं सकते (उनमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि वे उनके शत्रुओं से लड़कर उन्हें बचा सकें) इस हेतु हे शिवाजी, वे (शरणार्थी) आप से अटल प्रीति जोड़ते हैं। अतएव भूषण कवि कहते हैं कि हे शिवाजी! आपके यश के समान अन्य राजाओं के यश का वर्णन करना स्वीकार नहीं करते हैं। आप इन्द्र के छोटे भाई विष्णु के अवतार हैं (हिन्दुओं की रक्षा करने के कारण विष्णु का अवतार कहा है) इसलिए (दुखी) लोग आपके बाहुबल का आश्रय ले अपनी राय निश्चित करते हैं, (आगे क्या करना है उसका निश्चय आपके बल पर करते हैं) निडर बसने के लिए शरण आये लोगों के सिर पर आप पगड़ी क्या बाँधते हैं मानो उनके निर्भय होकर रहने के लिए किले ही बनवा देते हैं।

विवरण—यहाँ पगड़ी बाँधने में किले बनवाने की तथा फल रूप निडर होने की उत्प्रेक्षा की गई है अतएव यहाँ फलोत्प्रेक्षा अलंकार है।